आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:11-12-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर मास्टर ज्ञान-सागर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम अभी पढ़ाई पढ़ रहे हो, यह पढ़ाई है पतित से पावन बनने की, तुम्हें यह पढ़ना और पढ़ाना है.

बाबा हमें हर रोज तीन मुख्य बातों का ज्ञान देते है - आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान. बाबा हमें आत्मा-परमात्मा का ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम स्वयं को आत्मा समझ उस परमात्मा को याद करें. इस विधि से ही हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप कटते है और हमारी आत्मा पावन बनती हैं. लेकिन आत्मा, परमात्मा और परमधाम सबकुछ गुप्त है - इन पाँच तत्वों से बनी आँखें उसको देख नहीं सकती. इसके लिए बाबा ने हमें दिव्यबुद्धि दी है. हमारी दिव्यबुद्धि से जब परमात्मा को याद करते है तो हमारी दिव्यबुद्धि कहती है कि इस संगमयुग पर परमात्मा तो ब्रह्मा के तन में है और ब्रह्मा तो साकार में थे. इसलिए जब हमारी दिव्यबुद्धि युज करते है तो परमात्मा को कही आकाश में नहीं ढूँढते है लेकिन तुरंत हमारी बुद्धि मधुबन चली जाती है और ब्रह्मा की आँखों में और उनकी भृकुटी में हमें परमात्मा का साक्षात्कार होता है. हम बच्चे कितने भाग्यशाली है कि हमारी आत्मा को पावन-शुद्ध-पवित्र बनाने के लिए दो सबसे मुख्य आत्माये, शिव और ब्रह्मा, हमारे बाप और दादा बनकर हमें खेल-खेल में शूद्र मनुष्य से दैवी-देवता जैसा बना रहे हैं, सतयुग के लायक बना रहे हैं. यह सारे कल्प में एक संगमयुग पर ही होता हैं. इसे हमारा दिल यही गाता है वाह रे मेरे बाबा वाह! और वाह रे मेरा भाग्य वाह!

आज की मुरली से आत्मा-परमात्मा के ज्ञान के लिए कहे गये महा-वाक्यों ----

- बाबा ने कहा, बाप इस शरीर द्वारा तुमको समझाते हैं, इनको (ब्रह्मा के शरीर को) जीव कहा जाता है. इनमें ब्रह्मा की आत्मा भी है और मैं भी इसमें आकर बैठता हूँ, ब्रह्मा को दादा कहा जाता है. यह निश्चय बच्चों को बहुत पक्का होना चाहिए. बरोबर शिवबाबा ने जिसमें पधरामणी की है, वह शिव-बाप खुद कहते हैं - मैं इनके बहुत जन्मो के अन्त में आता हूँ.

- बाप खुद कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब तुम भ्रष्ट मत पर पतित बन जाते हो. तुम्हें विकारी मनुष्य से निर्विकारी देवता बनाने बाप आते हैं. अभी कलियुग में है आसुरी गुण वाले मनुष्य और सतयुग में है दैवी गुण वाले मनुष्य. श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत है एक भगवान की. जिसकी ही श्रेष्ठ मत से तुम देवता बनते हो.

- बाबा कहते है तुम अभी समझते हो यह गीता ज्ञान द्वारा ही मनुष्य से देवता बने हैं, जो तुम्हें बाप अभी दे रहे हैं. इसको ही भारत का प्राचीन राजयोग कहा जाता है. जिस गीता में ही काम महाशत्रु लिखा हुआ है. इस शत्रु ने ही तुम्हें हार खिलाई है. बाप तुम्हें इस पर ही जीत पहनाकर जगतजीत विश्व का मालिक बनाते हैं.

- बाबा कहते है बाप ही बीजरुप चैतन्य है. तुम भी चैतन्य हो. आत्मा को चैतन्य कहा जाता है. बाप ही ज्ञान सागर है, तुम्हें आकर सारी मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते है. अभी तुम्हारी आत्मा में ही ज्ञान है, और किसी भी आत्मा में ज्ञान हो नहीं सकता. तो बाप चैतन्य मनुष्य सृष्टि का बीजरुप है. यह (ब्रह्मा और हम सारे बच्चे) क्रियेशन है.

- बाबा कहते है बाप भारत में ही आते है. जो महान बेसमझ हैं उन्हें ही महान ते महान समझदार बनाते हैं. परन्तु फिर भी बाप को याद करें तब. बाप इस ब्रह्मा के रथ द्वारा तुम्हें कहते हैं मुझे याद करो, मैं ही पतित-पावन तुम्हारा बाप हूँ. तुम्हीं से खाऊ.....तुम्हीं से बैठूँ...यह यहॉ के लिए है.

ॐ शांति.